रोज़ा हम से क्या मुतालबा करता हे?

हज़रत मुफ्ती तकी उस्मानी दब.

हवाला- इस्लाही खुतबात हिन्दी/१.

बिस्मिल्लाहीर रहमान्नीर रहीम

बरकत वाला महीना

इन्शाअल्लाह चन्द रोज बाद रमज़ानुल मुबारक का महीना शुरु होने वाला हे और कौन मुसलमान ऐसा होगा जो इस महीने की अजमत (बडाई) और बरकत से वाकिफ न हो, अल्लाह तआला ने ये महीना अपनी इबादत के लिये बनाया हे और न मालूम क्या क्या रहमतें अल्लाह तआला इस महीने मे अपने बन्दों की तरफ नाज़िल फरमाते हे, हम और आप उन रहमतों का तसव्वुर भी नहीं कर सकते. इस महीने के अन्दर बाज़ आमाल ऐसे हे, जिन को हर मुसलमान जानता हे और उस पर अमल भी करता हे, जैसे इस महीने मे रोज़े फर्ज़ हे, अल्हम्दू लिल्लाह, मुसलमानों को रोज़ा रखने की तौफीक हो जाती हे और तरावीह के बारे मे मालूम हे की ये सुन्नत हे और मुसलमानों को इसमे सिरकत की सआदत हासिल हो जाती हे, लेकिन इस वकत एक और पहलू की तरफ तवज्जोह दिलाना चाहता हूं. आम तौर पर ये समझा जाता हे की रमजानुल मुबारक की खुसूसियत सिर्फ ये हे की इसमे रोज़े रखे जाते हे और रात के वकत तरावीह पढी जाती हे और बस, इसके अलावा और कोई खुसूसियत नहीं, इसमे तो कोई शक नहीं की

ये दोनों इबादतें इस महीने की बडी अहम इबादतों मे से हे, लेकिन बात सिर्फ यहां तक खत्म नहीं होती, बल्की हकीकत मे रमज़ानुल मुबारक हम से इससे ज़्यादा का मुतालबा करता हे.

इस महीने मे असल मक्सद की तरफ आ जावो

अल्लाह तआला भी जानते थे की जब ये इन्सान दुन्या के कारोबार और काम धन्धों मे लगेगा तो धीरे धीरे इसके दिल पर गफलत के परदे पड जाया करेगे और दुन्या के कारोबार और धन्धों मे खो जायेगा, इस गफ्लत को दूर करने के लिये समय समय पर कुछ वकत मुकर्रर कर दिये हे, उनमे एक रमज़ानुल मुबारक का महीना हे, इसलिये की साल के ग्यारह महीने तो आप तिजारत मे, खेती बाडी मे, मज़दूरी मे और दुन्या के कारोबार और धन्धों मे, खाने कमाने और हंसने बोलने मे लगे रहे और इसके नतीजे मे दिलो पर गफ्लत का परदा पडने लगता हे, इसलिये एक महीना अल्लाह तआला ने इस काम के लिये मुकर्रर फरमा दिया की इस महीने मे तुम असल पैदाइश के असल मक्सद यानी इबादत की तरफ लौट कर आवो, जिसके लिये तुम्हें दुन्या मे भेजा गया और जिसके लिये तुम्हें पैदा किया गया, इस महीने मे अल्लाह की इबादत मे लगो और ग्यारह महीने तक तुम से जो गुनाह सरज़द हुवे हे, उनको बख्शवाओ और दिल की सलाहियतों पर जो मैल आ चुका हे, उसको धुलवाओ और दिल मे जो गफ्लत के परदे पड चुके हे, उनको उठवाओ, इस काम के लिये हमने ये महीना मुकर्रर किया हे.

रमज़ान के मायने

लफ्ज़ "रमज़ान" मीम के सुकून के साथ (यानी रम्ज़ान) हम गलत इस्तेमाल करते हे, सही लफ्ज़ "रमज़ान" मीम के ज़बर के साथ हे और "रमज़ान" के लोगों ने बहुत से मतलब बयान किये हे, लेकिन असल अरबी ज़बान मे "रमज़ान" के मायने हे, "झुल्सा देने वाला और जला देने वाला" और इस महीने का ये नाम इसलिये रखा गया हे की सब से पहले जब इस महीने का नाम रखा जा रहा था, उस साल ये महीना शदीद झुल्सा देने वाली गर्मी मे आया था, इसलिये लोगों ने इसका नाम “रमज़ान" रख दिया.

अपने गुनाहों को बख्शवा लो

लेकिन उलमा ने फरमाया की इस महीने को "रमज़ान" इसलिये कहा जाता हे की इस महीने मे अल्लाह तआला अपनी रहमत से अपने फज़्ल व करम से बन्दों के गुनाहों को झुल्सा देते हे और जला देते हे, इस मकसद के लिये अल्लाह तआला ने ये महीना मुकर्रर फरमाया, ग्यारह महीने दुन्यावी कारोबार, दुन्यावी धन्धों मे लगे रहने के नतीजे मे गफलतें दिल पर छा गयी और इस मुद्दत मे जिन गुनाहों और खतावो का इरतिकाब हुवा, उनको अल्लाह तआला के हुज़ूर हाज़िर होकर उन्हें बख्शवा लो और गफ्लत के परदो को दिल से उठा दो, ताकी ज़िन्दगी का एक नया दौर शुरू हो जाये, इसलिये कुरान करीम ने फरमाया की सूरे बकरह/१८३ तरजुमा- यानी ये रोज़े तुम पर इसलिये फर्ज़ किये गये हे, ताकी तुम्हारे अन्दर तकवा पैदा हो जाये.

तो रमज़ान के महीने का असल मकसद ये हे की साल भर के गुनाहों को बख्शवाना और गफ्लत के परदे दिल से उठाना और दिलों मे तकवा पैदा करना, जैसे किसी मशीन को जब कुछ वकत इस्तेमाल किया जाये तो उसके बाद उसकी सर्विस करानी पडती हे, उसकी सफाई करानी होती हे, इस तरह अल्लाह तआला ने इन्सान की सर्विस और ओवर हालिंग के लिये ये रमजानुल मुबारक का महीना मुकर्रर फरमाया हे, ताकी इस महीने मे अपनी सफाई करावो और अपनी ज़िन्दगी को एक नई शक्ल दो.

इस महीने को फारिग करले

इसलिये सिर्फ रोज़ा रखने और तरावीह पढने की हद तक बात खत्म नहीं होती, बल्की इस महीने का ताकाज़ा ये हे की इन्सान अपने आपको इस महीने मे दूसरे कामों से फारिग करले, इसलिये की ग्यारह महीने तक ज़िन्दगी के दूसरे काम धन्धों मे लगे रहे, लेकिन ये महीना इन्सान के लिये उसकी असल पैदाइश के असल मक्सद की तरफ लौटने का महीना हे, इसलिसे इस महीने के तमाम वकत, वर्ना कम से कम अक्सर वकत या जितना ज़्यादा से ज़्यादा हो सके, अल्लाह की इबादत मे खर्च करे और इसके लिये इन्सान को पहले से तैयार होना चाहिये और इसका पहले से प्रोग्राम बनाना चाहिये.

रमज़ान के इस्तेकबाल का सही तरीका

आज कल इस्लामी दुन्या मे एक बात चल पडी हे, जिसकी शुरुवात अरब मुल्कों खास कर मिश्र और शाम से हुई और फिर दूसरे मुल्कों मे भी रायज हो गई और

हमारे यहां भी आ गई हे, वो ये हे की रमज़ान शुरू होने से पहले कुछ महफिलें आयोजित होती हे, जिसका नाम "महफिल इस्तेकबाले रमज़ान" रखा जाता हे, जिसमे रमज़ान से एक दो दिन पहले एक इज्तिमा आयोजित किया जाता हे और उसमे कुरान करीम और तकरीर और वाज़ रखा जाता हे. जिसका मक्सद लोगों को ये बतलाना होता हे की हम रमज़ानुल मुबारक का इस्तेकबाल कर रहे हे और उसको "खुश आमदीद" कह रहे हे, रमज़ान मुबारक के इस्तेकबाल का ये जज़्बा बहुत अच्छा हे, लकिन यही जज़्बा जब आगे बढता हे तो कुछ समय बाद बिद्अत की शक्ल इख्तियार कर लेता हे, चुनांचे बाज़ जगहों पर इस इस्तेकबाल की महफिल ने बिद्अत की शक्ल इख्तियार कर ली. लेकिन रमज़ानुल मुबारक का इस्तेकबाल ये हे की रमज़ान आने से पहले अपने समय का निज़ाम बदल कर ऐसा बनाने की कोशिश करो की इसमे ज्यादा से ज्यादा अल्लाह जल्ल शानुहू की इबादत मे खर्च हो, रमज़ान आने से पहले ये सोचो की ये महीना आ रहा हे, किस तरह मे अपनी मसरूफियात कम कर सकता हूं, इस महीने मे अगर कोई शख्स अपने आपको पूरे तौर पर इबादत के लिये फारिग करले तो सुब्हानल्लाह और अगर कोई शख्स पूरे तौर पर अपने आपको फारिग नहीं कर सकता तो फिर ये देखे की कौन कौन से काम एक महीने के लिये छोड सकता हूं, उनको छोडे और किन मसरूफियात को कम कर सकता हूं, उनको कम करे और जिन कामों को रमज़ान

के बाद तक मुअख्खर (लेट) कर सकता हे, उनको मुअख्खर करे और रमज़ान के ज्यादा से ज्यादा वकत को इबादत मे लगाने की कोशिश करे, मेरे नजदीक रमज़ान के इस्तेकबाल का सही तरीका यही हे, अगर ये काम कर लिया जाये तो इन्शाअल्लाह रमजानुल मुबारक की सही रूह और उसके अन्वार व बरकात हासिल होंगे, वर्ना ये होगा की रमज़ानुल मुबारक आयेगा और चला जायेगा और उससे सही तौर पर फायदा हम नहीं उठा सकेंगे.

रोज़े और तरावीह से एक कदम आगे

जब रमज़ानुल मुबारक को दूसरे मशागिल से फारिग कर लिया, तो अब उस फारिग वकत को किस काम मे, खर्च करे? जहां तक रोज़ों का ताल्लुक हे हर शख्स जानता हे की रोज़ा रखना फर्ज़ हे और जहां तक तरावीह का मामला हे, इससे भी हर सख्स वाकिफ हे, लेकिन एक पहलू की तरफ खास तौर पर मुतवज्जह करना चाहता हूं, वो ये की अल्हम्दू लिल्लाह जिस सख्स के दिल मे ज़र्रा बराबर भी ईमान हे, उसके दिल मे रमज़ानुल मुबारक का एक एहतेराम और उसका तकदुस होता हे, जिसकी वजह से उसकी कोशिश ये होती हे की इस मुबारक महीने मे अल्लाह की इबादत कुछ ज्यादा करे और कुछ नवाफिल ज़्यादा पढे, जो लोग आम दिनों मे पांच वकत की नमाज़ अदा करने के लिये मस्जीद मे आने से कतराते हे, वे लोग भी तरावीह जैसी लम्बी नमाज़ मे भी रोज़ाना शरीक हुवे हे, ये सब अल्हम्दू लिल्लाह इस महीने की

बरकत हे की लोग इबादत मे, नमाज़ मे, ज़िकर व अज़्कार और तिलावते कुरान मे मशगूल होते हे.

एक महीना इस तरह गुजार लो

लेकिन इन सब नफ्ली नमाज़ों, इबादतों, नफ्ली ज़िकर व अज़्कार और नफ्ली तिलावते कुरान करीम से ज़्यादा मुकद्दम एक और चीझ हे, जिसकी तरफ तवज्जोह नहीं दी जाती हे, वो ये हे की इस महीने को गुनाहों से पाक करके गुज़ारना की इस महीने मे हमसे कोई गुनाह सरजद न हो, इस मुबारक महीने मे आंख न बहके, नज़र गलत जगह पर न पडे, कान गलत चीझ न सुने, ज़बान से कोई गलत कलिमा न निकले और अल्लाह तआला की नाफरमानी से मुकम्मल परहेज़ हो. ये मुबारक महीना अगर इस तरह गुज़ार लिया, फिर चाहे एक नफ्ली रकत न पढी हो और तिलावत ज़्यादा न की हो और न ज़िकर व अज़्कार किया हो, लेकिन गुनाहों से बचते हुवे अल्लाह की मासियत और ना फरमानी से बचते हुवे ये महीना गुज़ार दिया तो आप काबिले मुबारक बाद हे और ये महीना आपके लिये मुबारक हे, ग्यारह महीने तक हर किस्म के काम मे मुब्तला रहते हे और ये अल्लाह तआला का एक महीना आ रहा हे, कम से कम इसको तो गुनाहों से पाक करलो, इसमे तो अल्लाह की नाफरमानी न करो, इसमे तो कम से कम झूठ न बोलो, इसमे तो गीबत न करो, इसमे तो बदनिगाही के अन्दर मुब्तला न हो, इस मुबारक महीने मे तो कानों को गलत जगह पर इस्तेमाल न करो, इसमे तो रिशवत न खावो, इस मे सूद न खावो,

कम से कम ये एक महीना इस तरह गुज़ार लो.

ये कैसा रोज़ा हुवा?

इसलिये की आप रोज़े तो माशाअल्लाह बडे ज़ौक व शौक से रख रहे हे, लेकिन रोज़े के क्या मतलब हे? रोज़े के मतलब ये हे की खाने से परहेज़ करना, पीने से परहेज़ करना और नफ्सानी ख्वाहिशात की तक्मील से परहेज़ करना, रोज़े मे इन तीनों चिझो से परहेज़ ज़रूरी हे, अब ये देखें की ये तीनों चीझे ऐसी हे जो अपने आप मे हलाल हे, खाना हलाल, पीना हलाल और जायज़ तरीके से मिया बीवी का नफ्सानी ख्वाहिशात की तक्मील करना हलाल, अब रोज़े के दौरान इन हलाल चिझो से तो परहेज़ कर रहे हे, न खा रहे हे और न पी रहे हे, लेकिन जो चीज़ी पहले से हराम थी, जैसे झूठ बोलाना, गीबत करना, बदनिगाही करना, जो हर हाल मे हराम थी, रोज़े मे ये सब चीझे हो रही हे, अब रोज़ा रखा हुवा हे और झूठ बोल रहे हे, रोज़ा रखा हुवा हे और गीबत कर रहे हे, रोज़ा रखा हुवा हे और बदनिगाही कर रहे हे और रोज़ा रखा हुवा हे, लेकिन वकत पास करने के लिये गन्दी फिल्मे देख रहे हे, ये क्या रोज़ा हुवा? की हलाल चीझे तो छोड दी और हराम चीझे नहीं छोडी, इसलिये हदीस शरीफ मे नबी करीमﷺ ने फरमाया की अल्लाह तआला फरमाते हे की जो शख्स रोज़े की हालत मे झूठ बोलाना न छोडे तो मुझे उसके भूखा और प्यासा रहने की कोई हाजत नहीं, इसलिये जब झूठ बोलना नहीं छोडा जो पहले से हराम था, तो खाना छोड कर उसने कौन सा बडा अमल किया.

रोज़े का सवाब मलियामेट हो गया

अगरचे फिक्ही एतिबार से रोजा दुरुस्त हो गया, अगर किसी मुफ्ती से पूछोगे की मेने रोज़ा भी रखा था और झूठ भी बोला था, तो वो मुफ्ती यही जवाब देगा की रोज़ा दुरुस्त हो गया, उसकी कजा वाजिब नहीं, लेकिन उसकी कजा न होने के बावजूद उस रोज़े का सवाब और बरकतें मलियामेट हो गयी, इस वासते की तुमने उस रोज़े की रूह हासिल नहीं की.

रोज़े का मक्सद तकवे की शमा रोशन करना हे

मेने आपके सामने जो ये आयत तिलावत की जिस्का तरजुमा- ये हे ऐ ईमान वालो! तुम पर रोज़े फर्ज़ किये गये जैसे पिछली उम्मतों पर रोज़े फर्ज़ किये गये, क्यों रोज़े फर्ज़ किये गये? ताकी तुम्हारे अन्दर तकवा पैदा हो, यानी रोज़ा असल मे इसलिये तुम्हारे ज़िम्मे शूरू किया गया, ताकी उसके ज़रिये तुम्हारे दिल मे तकवा पैदा हो, यानी रोज़ा असल मे इसलिये तुम्हारे ज़िम्मे शुरू किया गया ताकी इसके ज़रिये तुम्हारे दिल मे तकवे की शमा रोशन हो.

रोज़े से तकवा किस तरह पैदा होता हे?

बाज उलमा ए किराम ने फरमाया की रोज़े से तकवा इस तरह पैदा होता हे की रोजा इन्सान की कुव्वते हैवानिया और कुव्वते बहीमिय्या को तोडता हे, जब आदमी भूखा रहेगा तो उसकी वजह से उसकी हैवानी ख्वाहिशात और हैवानी तकाजे कुचले जायेंगे, जिसके नतीजे मे गुनाहों पर इकदाम करने का जज़्बा और जज़्बा

सुस्त पड जायेगा. लेकिन हमारे हज़रत मौलाना अशरफ अली साहिब थानवी(रह) अल्लाह तआला उनके दरजों को बुलन्द फरमाये, (आमीन) ने फरमाया की सिर्फ कुव्वते बहीमिय्या तोडने की बात नहीं हे, बल्की बात असल मे ये हे की जब आदमी सही तरीके से रोज़ा रखेगा तो ये रोज़ा खुद तकवे की एक अजीमुश्शान सीढी हे, इसलिये की तकवे के क्या मतलब हे? तकवे के मतलब ये हे की अल्लाह जल्ल जलालुहू की अजमत के इस्तिहज़ार से उसके गुनाहों से बचना, यानी ये सोच कर की मे अल्लाह तआला का बन्दा हूं और अल्लाह तआला मुझे देख रहे हे, अल्लाह तआला के सामने हाज़िर होकर मुझे जवाब देना हे और अल्लाह तआला के सामने पेश होना हे, इस तसव्वुर के बाद जब इन्सान गुनाहों को छोडता हे तो इसी का नाम तकवा हे, जैसा की अल्लाह तआला फरमाते हे सूरे अन नाज़िअत/४० तरजुमा- यानी जो शख्स इस बात से डरता हे की मुझे अल्लाह तआला के दरबार मे हाज़िर होना हे और खडा होना हे और उसके नतीजे मे वो अपने आपको हवाये नफ्स (नफ्स के तकाज़ों) और ख्वाहिशात से रोकता हे, यही तकवा हे.

मेरा मालिक मुझे देख रहा हे

इसलिये "रोज़ा" तकवा हासिल करने के लिये बेहतरीन ट्रेनिंग और बेहतरीन तरबियत हे, जब रोज़ा रख लिया तो आदमी फिर कैसा ही गुनाहगार, खताकार और फासिक व फाजिर हो, जैसा भी हो, लेकिन रोज़ा रखने के बाद

उसकी ये कैफियत होती हे की सख्त गर्मी का दिन हे और सख्त प्यास लगी हुई हे और कमरे मे अकेला हे, कोई दूसरा पास मौजूद नहीं और दरवाज़े पर कुन्डी लगी हुई हे और कमरे मे फ्रीज़ मौजूद हे और उस फ्रीज़ मे ठन्डा पानी मौजूद हे, उस वकत इन्सान का ये नफ्स ये तकाज़ा करता हे की इस शदीद गरमी के आलम मे पानी पी लूं, लेकिन क्या वो शख्स फ्रीज़ से ठंडा पानी निकाल कर पीलेगा? हरगिज़ नहीं पीयेगा, हालांकि अगर वो पानी पीले तो किसी भी इन्सान को कानों कान खबर न होगी, कोई लानत और मलामत करने वाला नहीं होगा और दुन्या वालों के सामने वो रोजादार रहेगा और शाम को बाहर निकल कर आराम से लोगों के साथ इफ्तार खाले तो किसी शख्स को भी पता नहीं चलेगा की इसने रोज़ा तोड दिया हे, लेकिन इसके बावजूद वो पानी नहीं पीता? पानी न पीने की इसके अलावा कोई और वजह नहीं हे की वो ये सोचता हे की अगरचे कोई मुझे नहीं देख रहा हे, लेकिन मेरा मालिक जिसके लिये मेने रोज़ा रखा हे, वो मुझे देख रहा हे.

मे ही इसका बदला दूंगा

इसलिये अल्लाह जल्ल शानुहू फरमाते हे की (तिर्मिज़ी) यानी रोज़ा मेरे लिये हे, इसलिये मे ही इसकी जज़ा दूंगा और आमाल के बारे मे तो ये फरमाया की किसी अमल का दस गुना अज़्र, किसी अमल का सत्तर गुना अज़्र और किसी अमल का सौ गुना अज़्र हे, यहां तक की सदके का अज़्र सात सौ गुना हे, लेकिन रोज़े के बारे मे

फरमाया की रोज़े का अज़र मे दूंगा, क्युकी रोज़ा उसने सिर्फ मेरे लिये रखा था. इसलिये की शदीद गर्मी की वजह से जब हलक मे कांटे लग रहे हे और ज़बान प्यास से खुश्क हे और फ्रीज़ मे ठन्डा पानी मौजूद हे और तन्हाई हे और कोई देखने वाला भी नहीं हे, इसके बावजूद मेरा बन्दा सिर्फ इसलिये पानी नहीं पी रहा हे की उसके दिल मे मेरे सामने खडा होने और जवाब देने का डर और एहसास हे, इसलिये तकवा रोज़े की एक शक्ल भी हे और उसके हासिल करने की एक सीढी भी हे, इसलिये की अल्लाह तआला ने फरमाया की हमने रोज़े इसलिये फर्ज़ किये ताकी तकवे की अमली तरबियत दें.

वर्ना ये तरबियती कोर्स मुकम्मल नहीं होगा

और जब तुम रोज़े के ज़रिये ये अमली तरबियत हासिल कर रहे हो, तो फिर इसको और तरक्की दो और आगे बढावो, इसलिये जिस तरह रोज़े की हालत मे शदीद प्यास के बावजूद पानी पीने से रुक गये थे और अल्लाह तआला के खौफ से खाना खाने से रुक गये थे, इसी तरह जब कारोबारे ज़िन्दगी मे निकलो और वहां पर अल्लाह की मासियत और ना-फरमानी का तकाज़ा और जज़्बा पैदा हो तो यहां भी अल्लाह के खौफ से उस नाफरमानी से रुक जावो, इसलिये एक महीने के लिये हम तुम्हें एक तरबियती कोर्स से गुज़ार रहे हे और ये तरबियती कोर्स उस वकत मुकम्मल होगा जब ज़िन्दगी के कारोबार मे हर मौके पर इस पर अमल करो, वर्ना इस तरह ये तरबियती कोर्स मुकम्मल नहीं होगा की अल्लाह

के खौफ से पानी पीने से तो रूक गये और जब कारोबारे ज़िन्दगी मे निकले तो फिर आंख गलत जगह पर पड रही हे, कान भी गलत बातें सुन रहे हे, ज़बान से भी गलत बातें निकल रही हे, इस तरह तो ये कोर्स मुकम्मल नहीं होगा.

रोज़े का ऐर कन्डीशनर लगा दिया, लेकिन?

जिस तरह इलाज जरूरी हे, इसी तरह परहेज़ ज़रूरी हे, अल्लाह तआला ने रोज़ा इसलिये रखवाया, ताकी तुम्हारे अन्दर तकवा पैदा हो, लेकिन तकवा उस वकत पैदा होगा, जब अल्लाह की नाफरमानियों और मासियतों से परहेज़ करोगे, जैसे कमरे को ठंडा करने के लिये आपने उसमे ऐर कन्डीशनर लगाया और ऐर कन्डीशनर का तकाजा ये हे की वो पूरे कमरे को ठंडा कर दे, अब आपने उसको ऑन कर दिया, लेकिन साथ ही उस कमरे की खिडकियां और दरवाज़े खोल दिये, इधर से ठंडक आ रही हे और उधर से निकल रही हे, इसलिये कमरा ठंडा नहीं होगा, बिल्कुल इसी तरह ये सोचिये की रोज़े का ऐर कन्डीशनर तो आपने लगा दिया, लेकिन साथ ही दूसरी तरफ अल्लाह की ना-फरमानियों और मासियतों के दरवाज़े और खिडकियां खोल दें, अब बताइये ऐसे रोज़े से कोई फायदा हासिल होगा?

असल मकसद "हुक्म की इत्तिबा"

इसी तरह रोज़े के अंदर ये हिक्मत की इसका मक्सद कुव्वते बहीमिय्या तोडना हे, ये बाद की हिक्मत हे, असल मकसद ये हे की उनके हुक्म की इत्तिबा हो और सारे दीन

ए इस्लाम का मदार अल्लाह और अल्लाह के रसूल के हुक्म की इत्तिबा हे, वे जब कहे की खावो, उस वकत खाना दीन ए इस्लाम हे और जब वे कहे की मत खावो उस वकत न खाना दीन ए इस्लाम हे, अल्लाह तआला ने अपनी इताअत और अपनी इत्तिबा का अजीब निज़ाम बनाया हे की सारे दिन तो रोजा रखने का हुक्म दिया और उस पर अज़र व सवाब रखा, लेकिन इधर सूरज छिपा, उधर ये हुक्म आ गया की अब जल्दी इफ्तार करो और इफ्तार मे जल्दी करने को मुस्तहब करार दिया और बिला वजह इफ्तार मे ताखीर (देरी) करना मकरुह और ना पसन्दीदा हे, क्यों नापसन्दीदा हे? इसलिये की जब सूरज छिप गया तो अब हमारा ये हुक्म आ गया अब भी अगर नहीं खावोगे और भूखे रहोगे तो ये भूख की हालत हमे पसन्द नहीं, इसलिये की असल काम हमारी इत्तिबा करना हे, अपना शौक पूरा करना नहीं हे.

हमारा हुक्म तोड दिया

आम हालात मे दुन्या की किसी चीझ की हिर्स और हवस बहुत बुरी चीझ हे, लेकिन जब वो कहे की हिर्स करो, तो फिर हिर्स ही मे लुफ्त और मज़ा हे. जब सुल्ताने दीन ए इस्लाम ये चाह रहे हे की मे हिर्स और लालच करुं तो फिर कनाअत के सर पर खाक, फिर कनाअत मे मज़ा नहीं हे, फिर तो लालच और हिर्स मे मज़ा हे, ये इफ्तार मे जल्दी करने का हुक्म इसी वजह से हे, सूरज छिपने से पहले तो ये हुक्म था एक ज़र्रा भी अगर मुंह मे चला

गया तो गुनाह भी लाज़िम और कफ्फारा भी लाज़िम, जैसे सात बजे सूरज गुरूब हो रहा था, अब अगर किसी शख्स ने छे बजकर उन्सठ मिनट पर एक चने का दाना खालिया, अब बताइये की रोज़े मे कितनी कमी आई? सिर्फ एक मिनट की कमी आई, एक मिनट का रोज़ा तोडा, लेकिन उस एक मिनट के रोज़े के कफ्फारे मे साठ दिन के रोज़े रखने वाजिब हे, इसलिये की बात एक चने और एक मिनट की नहीं हे, बात असल मे ये हे की उसने हमारा हुक्म तोडा, हमारा हुक्म ये था की जब तक सूरज गुरूब न हो जाये उस वकत तक खाना जायज़ नहीं, लेकिन तुमने ये हुक्म तोड दिया, इसलिये अब एक मिनट के बदले मे साठ दिन के रोज़े रखो.

इफ्तार मे जल्दी करो

और फिर जैसे ही सूरज गुरूब हो गया तो ये हुक्म आ गया की अब जल्दी खावो, अगर बिला वजह ताखीर कर दी तो गुनाह होगा, इस वासते की हमने हुक्म दिया था की खावो, अब खाना जरूरी हे.

सहरी मे ताखीर (देरी) अफ्ज़ल हे

सहरी के बारे मे हुक्म ये हे की सहरी ताखीर से खाना अफज़ल हे, जल्दी खाना खिलाफे सुन्नत हे, बाज़ लोग रात को बारह बजे सहरी खाकर सो जाते हे, ये खिलाफे सुन्नत हे, चुनांचे सहाबा ए किराम (रदी) का भी यही मामूल था की बिल्कुल आखरी वकत तक खाते रहते थे, इस वासते की ये वो वकत हे जिसमे अल्लाह तआला की तरफ से न सिर्फ ये की खाने की इजाजत हे बल्की

खाने का हुक्म हे, इसलिये जब तक वो वकत बाकी रहेगा, हम खाते रहेंगे, क्युकी अल्लाह तआला के हुक्म की इत्तिबा और इताअत इसी मे हे, अब अगर कोई शख्स पहले सहरी खाले तो गोया की उसने रोज़े के वकत मे अपनी तरफ से इजाफा कर दिया इसलिये पहले से सहरी खाने को ममनुआ (वरजित) करार दिया, पूरे दीन ए इस्लाम मे सारा खेल इत्तिबा का हे, जब हमने कहा की खावो तो खाना सवाब हे और जब हमने कहा की मत खावो तो न खाना सवाब हे इसलिये हज़रत हकीमुल उम्मत(रह) फरमाया करते थे की जब अल्लाह तआला कह रहे हे की खावो और बन्दा कहे की मे तो नहीं खाता, या मे कम खाता हूं, ये तो बन्दगी और इताअत न हुई, अरे भाई! न तो खाने मे कुछ रखा हे और न ही न खाने मे कुछ रखा हे, सब कुछ उनकी इताअत मे हे, इसलिय जब उन्हों ने कह दिया की खावो, तो फिर खावो, इसमे अपनी तरफ से ज्यादा पाबन्दी करने की ज़रूरत नहीं.

एक महीना बगैर गुनाह के गुज़ार लो

अलबत्ता एहतेमाम करने की चीझ ये हे की जब रोज़ा रख लिया तो अब अपने आपको गुनाहों से बचावो, आंखों को बचावो, कानों को बचावो, ज़बानों को बचावो, एक रमज़ान के मौके पर हमारे हमारे हज़रत डाक्टर अब्दुल हई(रह) ने यहां तक फरमाया की मे एक ऐसी बात कहता हूं जो कोई और नहीं कहेगा, वो ये की अपने नफ्स को इस तरह बहलावो और उससे अहद करलो की एक महीना बगैर गुनाह के गुजार लो, जब ये

महीना गुजर जाये तो फिर तेरा जो जी चाहे करना, चुनांचे हज़रते वाला फरमाते हे की अल्लाह तआला की रहमत से उमीद हे की जब एक महीना बगैर गुनाह के गुज़र जायेगा, तो फिर अल्लाह तआला खुद उसके दिल मे गुनाह छोडने का जज़्बा पैदा फरमा देंगे, लेकिन ये अहद करलो की ये अल्लाह का महीना आ रहा हे, ये इबादत का महीना हे, ये तकवा पैदा करने का महीना हे, हम इसमे गुनाह नहीं करेगे और हर शख्स अपने गरेबान मे मुंह डाल कर देखे की वो किन गुनाहों मे मुब्तला हे, फिर उन सब के बारे मे ये अहद करले की मे इनमे मुब्तला नहीं हूंगा, जैसे ये अहद करले की रमज़ानुल मुबारक मे आंख गलत जगह पर नहीं उठेगी, कान गलत बात नहीं सुनेंगे, ज़बान से गलत बात नहीं निकलेगी, ये तो कोई बात न हुई की रोज़ा भी रखा हुवा हे और बुराइयों को भी आंख से देख रहे हे और उससे लुफ्त ले रहे हे.

इस महीने मे हलाल रिज़्क

दूसरी अहम बात जो हमारे हज़रत(रह) फरमाया करते थे की कम से कम इस एक महीने मे तो रिज्के हलाल का एहतेमाम करलो, जो लुकमा आये, वो हलाल का आये, कहीं ऐसा न हो की रोज़ा तो अल्लाह के लिये रखा और उसको हराम चीझ से इफ्तार कर रहे हे, सूद पर इफ्तार हो रहा हे, या रिशवत पर इफ्तार हो रहा हे, या हराम आमदनी पर इफ्तार हो रहा हे, ये कैसा रोज़ा हुवा? की सहरी भी हराम और इफ्तार भी हराम और दरमियान मे

रोज़ा, इसलिये खास तौर से इस महीने मे हराम रोजी से बचो और अल्लाह तआला से मांगो की या अल्लाह! मे रिज़्के हलाल खाना चाहता हूं, मुझे रिज़्के हराम से बचा लीजिये.

हराम आमदनी से बचें

बाज़ हज़रात वे हे, जिनका बुनियादी ज़रिया ए रोज़गार अल्हम्दू लिल्लाह हराम नहीं हे, बल्की हलाल हे, अलबत्ता एहतेमाम न होने की वजह से कुछ हराम आमदनी की मिलावट हो जाती हे, ऐसे हज़रात के लिये हराम से बचना कोई दुशवार काम नहीं हे, वे कम से कम इस महीने मे थोडा सा एहतेमाम (पाबन्दी) करले और हराम आमदनी से बचें. ये अजीब किस्सा हे की इस महीने के लिये तो अल्लाह तआला ने फरमाया था, की ये सबर का महीना हे, ये मवासात और गमख्वारी का महीना हे, एक दसरे से हमदर्दी का महीना हे, लेकिन इस महीने मे बराबरी के बजाये लोग उल्टा खाल खींचने की फिकर करते हे. इधर रमज़ान मुबारक का महीना आया और उधर चिझो की ज़खीरा अन्दोज़ी शुरु कर दी, इसलिये कम से कम इस महीने मे अपने आपको ऐसे हराम कामों से बचा लो.

अगर आमदनी मुकम्मल हराम हे तो फिर?

बाज़ हज़रात वे हे जिनका ज़रिया ए आमदनी मुकम्मल तौर पर हराम हे, जैसे वे किसी सूदी इदारे मे मुलाज़िम हे, ऐसे हज़रात इस महीने मे क्या करे? हमारे हज़रत डाक्टर अब्दुल हई(रह) अल्लाह तआला उनके दरजे बुलन्द

फरमाये, आमीन. हर आदमी के लिये रास्ता बता गये, वो फरमाते हे की मे ऐसे आदमी को जिसकी मुकम्मल आमदनी हराम हे, ये मशवेरा देता हूं की अगर हो सके तो रमज़ान मे छुट्टी ले ले और कम से कम इस महीने के खर्च के लिये जायज़ और हलाल ज़रिये से इन्तेज़ाम करले, कोई जायज़ आमदनी का ज़रिया इख्तियार करले और अगर ये भी न हो सके तो इस महीने के लिये खर्च के लिये किसी से कर्ज़ ले ले और ये सोचे की मे इस महीने मे हलाल आमदनी से खाऊंगा, कम से कम इतना तो करले.

गुनाहों से बचना आसान हे

बहरहाल मे ये कहना चाह रहा था की लोग इस महीने मे नवाफिल वगैरह का तो एहतेमाम बहुत करते हे, लेकिन गुनाहों से बचने का एहतेमाम नहीं करते, हालांकि इस महीने मे अल्लाह तआला ने गुनाहों से बचने को आसान फरमा दिया हे, चुनांचे इस महीने मे शैतान को बेडियां पहना दी जाती हे और उनको कैद कर दिया जाता हे, इसलिये की शैतान की तरफ से गुनाह करने के वस्वसे और तकाज़े खत्म हो जाते हे इसलिये गुनाहों से बचना आसान हो जाता हे.

रोज़े मे गुस्से से परहेज़

तीसरी बात जिसका रोज़े से खास ताल्लुक हे, वो हे गुस्से से परहेज़ और बचना, चुनांचे हदीस शरीफ मे हे की नबी करीमﷺ ने फरमाया की ये गमख्वारी का महीना हे, एक दूसरे से गमख्वारी का महीना हे, इसलिये गुस्सा और गुस्से

की वजह से सरजद होने वाले जुरमों और गुनाह, जैसे झगडा, मार पिटाई और तूतकार, इन चिझो से परहेज़ का एहतेमाम करे, हदीस शरीफ मे नबी करीमﷺ ने यहां तक फरमा दिया की (तिर्मिज़ी) यानी अगर कोई शख्स तुमसे जहालत और लडाई की बात करे तो तुम कह दो की मेरा रोज़ा हे, मे लडने के लिये तैयार नहीं, न ज़बान से लडने के लिये तैयार हूं और न हाथ से, इससे परहेज़ करे, ये सब बुनियादी काम हे.

रमज़ान मे नफ्ली इबादतें ज़्यादा करे

जहां तक इबादतों का ताल्लुक हे, तमाम मुसलमान जानते ही हे की रोज़ा रखना, तरावीह पढना ज़रूरी हे और तिलावते कुरान को चुंकि इस महीने मे खास मुनासबत हे, चुनांचे हुजूर नबी करीमﷺ रमज़ान के महीने मे हज़रत जिबरील(अलै) के साथ पूरे कुरान करीम का दौर फरमाया करते थे, इसलिये जितना ज़्यादा से ज़्यादा हो सके, इस महीने मे तिलावत करे और इसके अलावा चलते, फिरते, उठते, बैठते ज़बान पर अल्लाह का ज़िकर करे और तीसरा कलिमाः सुब्हानल्लाहि वल्हम्दु लिल्लाहि व ला इलाह इल्लल्लाहु वल्लाहु अकबर और दुरूद शरीफ और इस्तेगफार का चलते फिरते कसरत से पाबन्दी करे और नवाफिल की जितनी कसरत हो सके करे और आम दिनों मे रात को उठ कर तहज्जुद की नमाज़ पढने का मौका नहीं मिलता, लेकिन रमज़ान मुबारक मे चूंकि इन्सान सहरी के लिये उठता हे, थोडा पहले उठ जाये और सहरी से पहले तहज्जुद पढने का

मामूल बनाले और इस महीने मे नमाज़ खुशू (पूरे ध्यान और तवज्जोह) के साथ और मर्द जमात के साथ नमाज़ पढने का एहतेमाम करले, ये सब काम तो इस महीने मे करने ही चाहियें, ये रमज़ानुल मुबारक की खुसूसियात मे से हे, लेकिन इन सब चिझो से ज़्यादा अहम गुनाहों से बचने की फिकर हे.

अल्लाह तआला हम सबको इन बातों पर अमल करने की तौफीक अता फरमाये और रमज़ानुल मुबारक के अन्वार व बरकतों से सही तौर पर फायदा उठाने की तौफीक अता फरमाये, और अल्लाह हम सबको रमजान के हर एक एक लम्हे की कदरदानी नसीब फरमाये, आमीन.

मुज नाचीज को भी अपनी दुआओ मे याद रखना. ज्जाकुमुल्लाहु खेरन.